शिक्षा संवाद
2023, 10 (2): 51-76
ISSN: 2348-5558
©2023, संपादक, शिक्षा संवाद, नई दिल्ली

आलेख

प्रारंभिक विद्यालय में विद्यार्थियों की बुनियादी साक्षरता के सापेक्ष पढ़ने की समझ का अध्ययन

पवन कुमार
शिक्षाशास्त्र विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश
ईमेल: pawan.k28890@gmail.com

सार

प्रस्तुत आलेख में प्रारंभिक कक्षा के विधर्थियों के पढ़ने की समझ का एवं पढ़ने के प्रति रुझान की जांच पड़ताल की गई है। इस शोध पत्र के माध्यम से हम शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की पड़ताल भी करने का प्रयास किया गया है। दरअसल, आज के शिक्षण कार्यक्रमों में किस प्रकार से छात्रों को भाषा शिक्षण के लिए तैयार किया जा रहा है। किसी भी संस्कृति में भाषा की समझ का होना अति आवश्यक है क्योंकि भाषा के माध्यम से समाज में विचारों का आदान प्रदान संभव होता है एवं भाषा विकास के लिए नए विद्यार्थियों का पढ़ने के समझ एवं पढ़ने के प्रति पारंगत होना जरूरी है इसके लिए शिक्षकों में सही पढ़ाने की कला की जानकारी होना एवं विद्यार्थियों में सही तरीके से पढ़ने के मार्ग पर प्रशस्त होना आवश्यक है। जैसा कि एन.सी.ई.आर.टी. अपने पाठयपुस्तक निर्माण एवं भाषा सीखने के लिए इस बात पर जोर देती है की भाषा के विकास हेतु समझ के साथ सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखने के पुनर्निरक्षण अत्यंत आवश्यकता है।विख्यात अमेरिकी भाषाविद नॉम चोमस्की के अनुसार "प्रत्येक बालक में आनुवंशिक रूप से व्याकरण की संरचनाओं का एक आंतरिक एवं जन्मजात साँचा होता है जिसे सार्वभौमिक शब्दशास्त्र (Universal Grammar) कहा जाता है, जिसके द्वारा बालक स्वयं अपनी भाषा निर्मित करता है। एक परिवार, अध्यापक, विद्यालय, समाज, समुदाय और राष्ट्र को बालक के भाषा के अर्जन हेतु पृथक-पृथक परन्तु एक ही दिशा में प्रयास करने की आवश्यकता है। पढ़ने की समझ के पड़ताल के लिए हम विभिन्न प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में जाकर अवलोकन एवम साक्षात्कार के द्वारा यह जानने का प्रयास किया है की तत्कालीन समय में विद्यार्थियों में भाषा पढ़ने की समझ कैसे विकसित की जा रही है।

कूटशब्द: बुनियादी साक्षरता, पठन, समझ, भाषा, अधिगम।

साक्षरता का अर्थ है साक्षर होना अर्थात पढने और लिखने की क्षमता से संपन्न होना। सरल शब्दों में कहें तो जो पढ़ और लिख सकता है वही साक्षर होगा। अलग अलग देशों में साक्षरता के अलग अलग मानक हैं। भारत में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के अनुसार यदि कोई व्यक्ति अपना नाम लिखने और पढने की योग्यता हासिल कर लेता है तो उसे साक्षर माना जाता है।

साक्षरता से तात्पर्य किसी शब्द या वाक्य को पढ़ने या समझने से है। हर एक व्यक्ति जो शब्दों को पढ़ सकता है, उन्हे समझ सकता है तो वह व्यक्ति एक शिक्षित व्यक्ति के रूप मे गिना जाता है। अतः इस आधार पर हम कह सकतें है, की जब लोगों मे शब्दों को पढ़ने तथा उन्हे समझने का ज्ञान हो जाता है, तो इसे साक्षरता कहते है । ऐसे व्यक्ति जो पढ़ाई लिखाई से संबंधित कार्य करने मे सक्षम है उन्हे साक्षर व्यक्तियों की सूची मे रखा जाता है। अलग अलग देशों मे साक्षरता के भिन्न भिन्न मानक होते है। राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के अनुसार भारत मे यदि कोई व्यक्ति अपना स्वयं का नाम लिखने और बोलने की योग्यता प्राप्त कर लेता है तो वह एक साक्षर व्यक्ति माना जाता है।

साक्षरता शब्द स + अक्षर से बना है। जिसका मतलब ज्ञान रखने वाला अर्थात पढ़ा लिखा होना है। अतः जो व्यक्ति साक्षर है वह लोगों के बीच वाद संवाद कर सकता है, वह अपने विचार लोगों के समक्ष रख सकता है। इससे लोगों के बीच उसकी पहचान बनती है। इसके अलावा वह राज्य कार्यों मे भी अपनी भूमिका निभा सकता है । इस आधार पर हम कह सकतें है की लोगों का साक्षर होना बहुत जरूरी है । इससे हमारे देश के विकास मे भी काफी वृद्धि देखने को मिलती है।

बुनियादी साक्षरता:बुनियादी साक्षरता का अर्थ है मौखिक भाषा विकास, डिकोडिंग (ध्वनि और आकार में तालमेल) पढ़ने का प्रभाव, पाठ बोधन एवं लेखन में रुचि तथा दक्षता प्राप्त करना है। बुनियादी संख्या ज्ञान का अर्थ है संख्या बोध, आकार और स्थानिक संबंध, नाप, आदि में रुचि तथा दक्षता प्राप्त करना।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार,"देश में नई शिक्षा नीति लागू की गई है इस नीति को उसकी व्यापकता और समावेशिका के कारण हर दिशा में प्रोत्साहन मिल रहा है। यह पहली ऐसी नीति है जो देश में औपचारिक संस्थागत शिक्षा में प्री स्कूलिंग के विचार को बल प्रदान करती है। इस नीति का एक और विशिष्ट पहलू यह भी है कि इसमें कक्षा तीन तक के बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान यानी एफ. एल. एन. पर विशेष बल दिया गया है।" राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से इस दिशा में कई प्रयास करने की सिफारिश की गई है,यह नीति विद्यार्थियों से प्रत्यक्ष रूप से तभी जुड़ सकेगी जब आधारभूत शिक्षा जो कि लेखन,आधारभूत अंक गणित, इत्यादि में है विद्यार्थीयों प्राप्त हो। नीति में प्रत्येक छात्र को एफ.एल.एन. से जोड़ने को एक चुनौती के तौर पर लिया गया है इसके लिए केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय मिशन लॉन्च किया है जिसे नेशनल इनीशिएटिव फॉर प्रोफिशिएंसी इन रीडिंग की अंडरस्टैंडिंग एंड न्यूमैरेसी यानी निपुण भारत का नाम दिया गया है इस मिशन का मुख्य उद्देश्य बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान विकसित करना है। मिशन का दृष्टिकोण देश में एक व्यापक विश्व स्तरीय वातावरण तैयार करना है जिससे ग्रेड 3 के अंत तक बच्चे लिखने,पढ़ने और गणितीय समझ की क्षमता प्राप्त कर सके। मिशन के तहत 3 से 9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के पढ़ने लिखने और संख्या ज्ञान से जुड़ी आवश्यकताओं को पूर्ण किया जाएगा,संभावित कारणों को भी खोजा जाएगा जिनके कारण सीखने में बाधा आ रही है तब स्थानीय एवं देशव्यापी परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए नई रणनीतियां बनाई जाएगी।इसके अलावा इस उद्देश्य को भी साथ लेकर आगे बढ़ेंगे की प्रीस्कूलिंग एवं प्रारंभिक स्तर के मध्य मजबूत और सुचारू संपर्क स्थापित हो सके मिशन की गाइडलाइन के अनुसार मिशन के लक्षण और उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शैक्षिक संस्थानों एवं हितग्राही की भूमिकाओं को परिभाषित किया जाएगा ताकि मिशन के लक्षणों को सुगमता से हासिल कर सके।

पढ़ने की समझ

पढ़ना केवल एकदम से प्राप्त हो जाने वाली या सीखी जाने वाली सरल प्रक्रिया नहीं है यह धीरे-धीरे आत्मसात होने वाला कौशल है। जो व्यक्ति के ज्ञानार्जन में मुख्य भूमिका अदा कर सकती है। किसी छुपी हुई सामग्री या वस्तु को उच्चरित करने या भाषा की लिपि को पहचानना एवं अक्षरों ध्वनियों को जोड़कर शब्द या वाक्य रचना कर लेना मात्र ही पढ़ना नहीं हो सकता है। अपितु हम जिस भी लेख को पढ़ते हैं उसे पूर्ण रूप से समझ लेना अथवा अंगीकार कर लेना एक सार्थक पढ़ने को परिभाषित कर सकता है। पढ़ना एक प्रकार का एक दृश्य प्रक्रिया ना होकर के कई कौशलों एवं क्रियो का बनाया गया संयोजन है। पढ़ने में मुख्य रूप से शामिल कौशल इसका सहज एवं स्वाभाविक रूप है तथा यह किसी के लिए जटिल एवं किसी के लिए रहस्यमई प्रकृति भी धारण कर सकती है। जो व्यक्ति दर व्यक्ति बदलता रहता है कई प्रकार से कौशलों का समीकरण एक सार्थक पढ़ने की प्रक्रिया को पूर्णता प्रदान करता है। पढ़ना केवल उच्चारण कर लेना ही नहीं उसे समझ पाना भी है। इस क्रिया में लिपि से परिचय,भाषा की वाक्य संरचना से परिचय एवं पूर्व ज्ञान पर निर्भर करता है।

पढ़ना क्या है

आमतौर पर किसी छुपी हुई शब्दावलियों को उच्चरित कर लेना पढ़ना मान लिया जाता है अक्षरों को और ध्वनियों को जोड़कर शब्द या फिर एक वाक्य बना लेना पढ़ने की श्रेणी में ले लिया जाता है परंतु क्या किसी लिपि को पहचाना या अपनी समझ अनुभव जानकारी भावना के आधार पर किसी को मान लेना या अपना संदर्भ दे देना पढ़ने की श्रेणी में आएगा। पढ़ना एक प्रकार का लिखित सामग्री से अर्थ निर्माण करने की प्रक्रिया है यह एक अत्यंत जटिल कौशल है जिसमें अनेक प्रकार की क्षमताओं के साथ निरंतर संवाद होता रहता है।रिचर्ड सी एंडरसन, अल्फ्रेड अचीवर, जुडिथ ए स्कॉट और ए.जी.विलकिंग्सनने अपनी पुस्तक “पढ़ना किसे कहते हैं ” मे पढ़ने की तुलना आर्केस्ट्रा की एक मधुर सिंफनी के साथ की है जिसमें कई प्रकार के वाद्य यंत्र एक साथ बजते हैं।

इस प्रकार पढ़ना भी एक साथ कई छोटे-छोटे कौशलों में बंटा होता है एवं किसी भी एक कौशल को अर्जित कर लेने से पढ़ना नहीं आ जाता।उदाहरण: यदि आप वर्णमाला जानते हैं और शब्दों को सही पहचान पाते हैं तो केवल इससे ही आप सही मायने में समझ नहीं बना सकते हैं पढ़ना तभी संभव होगा जब पढ़ने से जुड़े सारे कौशल एक दूसरे से संवाद करते रहे तथा एक साथ काम करें जैसे सिंफनी के वाद्य यंत्र में तानपुरा,सीटर,तबला एक साथ बजाते हैं किंतु इनमें से कोई एक भी बेसुरा हो जाए तो संगीत खराब हो जाएगा।

पढ़ना और संगीत में एक दूसरी समानता यह भी है कि दोनों में अभ्यास की आवश्यकता है जिस प्रकार संगीत सीखने में पूरी उम्र लग जाती है वैसे ही पढ़ना सीखने में भी पूरी उम्र लग जाती है तथा पढ़ने के कई प्रकार के अर्थ हो सकते हैं किसी कहानी कविता या संवाद का कोई क्या अर्थ ग्रहण करेगा यह पढ़ने वाले की पृष्ठभूमि, पढ़ने के उद्देश्य, व उसके संदर्भ से निर्धारित होता है जिसमें वह सामग्री पढ़ी जा रही है पढ़ने की एक प्रचलित पुरानी अवधारणा यह कहती है की पढ़ने की प्रक्रिया में शब्दों का उच्चारण अर्थ की ओर ले जाता है शब्दों को अर्थो से मिलकर उपवाक्य व वाक्य के अर्थ बनाए जाते हैं वाक्य के अर्थ को जोड़कर पूरे संवाद के अर्थ को समझा जाता है। इस अवधारणा के अंतर्गत बच्चों को सबसे पहले अक्षरों का ज्ञान उसकी पहचान कराई जाती है फिर शब्द और वाक्य को पहचान करने की कौशल सिखाई जाती है इस तरह ईट पर ईट रखकर वह अर्थ तक पहुंचते हैं परंतु अब तत्कालीन समय में शोध के माध्यम से यह सिद्ध किया गया है कि यह केवल एक आंशिक रूप से ठीक-ठाक प्रक्रिया है, क्योंकि अक्षरों का शब्दों की जानकारी के साथ पढ़ने के लिए यह भी आवश्यक है कि पाठ किसके साथ संबंधित है। इसकी समझ विकसित हो एक पठन सामग्री कोई अर्थ के बर्तन जैसा नहीं है, न होती है वास्तव में उसमें आंशिक रूप से कुछ अर्थ व जानकारी होती है जिसका प्रयोग पढ़ने वाले इसलिए करता है ताकि वह अपने पूर्व ज्ञान से जोड़कर उस सामग्री के वास्तविक अर्थ तक समझ स्थापित कर सके।

पढ़ना एक प्रकार की प्रक्रिया हैजिसमें पठन सामग्री से मिलने वाली जानकारी पढ़ने वाले के पूर्व ज्ञान में निरंतर एक संवाद स्थापित करती रहती है यह ठीक उसी प्रकार है जैसे

महाभारत की कथा में अभिमन्यु को चक्रव्यूह भेदन कि कला उसको पूर्व ज्ञान से प्राप्त था तथा जब संकट की स्थिति में उसे चक्रव्यूह को तोड़ना था तो उसने अपने पूर्व ज्ञान के साथ परिस्थितियों का संबंध स्थापित करते हुए चक्रव्यूह भेदन करने के लिए जाता है।

पढ़ने के पारंपरिक संप्रत्यय के आधार पर कुछ बच्चे बहुत ही उदासीन मन से श्रम करते हुए अक्षर से अक्षर को जोड़ जोड़कर पढ़ने का प्रयास करता है जैसे- म में ए की मात्रा मे, र में ई की मात्रा री मेरी इस प्रकार इस प्रकार इस विधि में बच्चे शब्दों के सही उच्चारण में इतने तल्लीन हो जाते हैं कि वह अर्थ के विभिन्न पक्षों पर ध्यान नहीं देते हैं।

कुछ बच्चे तो पढ़ने के लिए अपने पूर्व ज्ञान पर इतना निर्भर होते हैं कि वह तस्वीरें शीर्षकों कल्पना व पठन सामग्री में छपी छुटपुट जानकारी के आधार पर ही कहानी बना देते हैं उदाहरण के लिए अभिमन्यु अपने पूर्व ज्ञान के आधार पर चक्रव्यूह भेजने के लिए जाते हैं परंतु अंतिम दरवाजे को तोड़ने का ज्ञान उनको नहीं होता है इस प्रकार इस प्रकार वह हार का सामना करते हैं इसी तरह पूर्व ज्ञान के आधार पर ज्यादा निर्भर रहने वाले बच्चे वह क्षमता विकसित नहीं कर पाते हैं जिसमें वह शब्द वह वाक्य को पहचान सके एवं पूरे पाठ के अर्थ को समझ सकें।

पढ़ना एक रचनात्मक गतिविधि हैकोई भी पाठ सामग्री अपने में निहित संपूर्ण ज्ञान को नहीं बताती है तभी तो पाठक अपने पूर्व ज्ञान का उपयोग करके पाठ सामग्री में निहित संदेश की आपूर्तियों को पूरा करके उसमें दी गई जानकारी को समझने का प्रयास करता है अतः पाठक स्वयं अपने अर्थ का निर्माण करता है पूर्व ज्ञान में अंतर होने के कारण पाठकों में अर्थ निर्माण में काफी विविधता हो सकती है कुछ लोगों में इतना पूर्व ज्ञान नहीं होता है कि पाठ सामग्री को समझ सकें यह भी अपने पूर्व ज्ञान का उचित उपयोग नहीं कर पाते अक्सर बात समझने में इसलिए कठिनाई पैदा होती है क्योंकि विषय के बारे में लेखक व पाठक की अवधारणाएं अलग-अलग हो सकती है।

आर.एल.ट्रस्ट के अनुसार," पढ़ना एक युक्तिगत प्रक्रिया होनी चाहिए किसी भी पाठ सामग्री को पढ़ते समय वह किस दृष्टिकोण से पढ़नी चाहिए या पहले से विषय वस्तु से कितना परिचित है एवं पढ़ने का उद्देश्य क्या है यह पाठक को पता होना चाहिए कई शोधों से यह पता चलता है कि परिपक्व पाठक में कम से कम दो युक्तियां नहीं होती हैं वह कुशल पाठ को पाठ सामग्री से संबंधित अपने पूर्व ज्ञान का जायजा लगाते हैं,तथा समझने की प्रक्रिया को नियंत्रित करते हैं वे उस युक्ति का प्रयोग नहीं करते हैं जिससे प्रक्रिया को असफल होने पर काम में लाई जाती हैं। कुशल पाठक जानते हैं कि पढ़ना अलग-अलग उद्देश्य से होता है उदाहरण के लिए वह समझते हैं कि जो लोग आनंद प्राप्ति के लिए पढ़ते हैं, उन्हें पढ़ते वक्त शायद गहरी समझ की आवश्यकता नहीं होती है परंतु परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए खूब समझकर पढ़ना होगा अतः बच्चों को पढ़ने के लिए उद्देश्य का होना अत्यंत आवश्यक है।

पढ़ने की प्रक्रिया में प्रेरणा का भी अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका है पढ़ने की गहरी इच्छा पढ़ना सीखने की कुंजी की तरह कार्य करती है अधिकतर बच्चों को पढ़ना सीखने में कई साल लगेंगे लेकिन इस दौरान हमारी एक भाषा कोशिश होनी चाहिए कि बच्चों में यह उम्मीद बनी रहे कि वह कुशल पाठक बन सकेंगे पढ़ना अपने आप में एक आनंददायक बात है उन बच्चों के लिए जो निश्चित रूप से कुशल पाठक है काफी हद तक उन बच्चों के लिए भी जो औसत या औसत से नीचे श्रेणी में है कहते भी हैं जो बच्चे किताबों के मोह में खोए हुए हैं वह पढ़ने तथा पढ़ने को उद्देश्य को सीख जाते हैं। बच्चों को पढ़ना सीखने की प्रक्रिया अक्सर बहुत प्रभावी होती है इस प्रक्रिया में कई हिस्से बहुत निराशाजनक होते हैं। पढ़ने के नाम पर दी गई अधिकतर गतिविधियां रुचिकर होते हैं इसलिए जब एक शोध में यह बात पता चलता है कि बच्चों को अपनी कक्षा से एक कक्षा आगे की किताबें पढ़ने के लिए कहा जाता है तो उन्हें बहुत मजा आ रहा होता है लेकिन पढ़ने के नाम पर स्कूल में होने वाली गतिविधियों में कोई रुचि नहीं होती है या हैरानी की बात नहीं है वे अध्यापक जो प्रेरणा के स्तर को उच्च बनाए रखते हैं उनके कक्षा में बच्चे गतिविधियों के साथ आरंभ से ही पढ़ने को समझने के साथ जारी रखते हैं। जिन अध्यापकों की कक्षा में अभिप्रेरित बच्चे होते हैं उनके

कक्षाओं में खूब काम होता है और स्नेह और विश्वास होता है अध्यापकों के द्वारा पढ़ाए गए बच्चे मूल्यांकन में औसत से कहीं अधिक अंक लाते हैं।

पढ़ना एक कौशल है जिसका निरंतर विकास होता रहता है। संगीत की तरह पढ़ना भी ऐसी कला है जिसमें एक बार महारत हासिल कर ली जाए उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अभी तो यह एक ऐसा कौशल है जिसमें निरंतर अभ्यास करने की आवश्यकता होती है यह प्रक्रिया इस वक्त शुरू हो जाती है जब कोई व्यक्ति विशेष किसी पढ़ने लिखने की संस्कृति से वाकिफ होता है। वह पहले पाठ सामग्री के समक्ष होता है। पढ़ना एक जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। एक कुशल पाठक होने का मतलब आप निरंतर का अभ्यास करते रहते हैं और कौशल में निरंतर विकास व सुधार करने के लिए प्रेरित रहते हैं।

वर्ष 1950 के पहले तक अंग्रेजी की अधिकतर पढ़ाई वर्णमाला पद्धति से कराई जाती थी इस पद्धति में सबसे पहले बच्चे को अंग्रेजी वर्णमाला के 26 अक्षर सिखाए जाते थे ,यहां तक सीखने की प्रक्रिया ऊंचा बोलकर की जाती है। इसके बाद उन्हें चुप रहकर पढ़ना सिखाया जाता था जिसमें बच्चे पहले शब्दों को इस तरह बोलते हैं मानो अपने से बात कर रहे हो।इसके बाद भी उन्हें बिना आवाज निकाले चुप रहकर बोलते हैं अंत में बिना हाथ हिलाए पढ़ना सीखते हैं। हो सकता है कि अब भी उंगली नीचे रखकर शब्दों को पढ़ते हो इसलिए इस पद्धति की आखिरी चरण में उन्हें इस बात के लिए प्रेरित किया जाता था कि वह बिना शब्द के नीचे उंगली रख केवल आंख से देखकर ही पढ़े फिर बच्चों को कठिन पुस्तक पढ़ने को दी जाती थी जिससे उनका शब्द भंडार और व्याकरण का ज्ञान विकसित हो सके और उम्मीद की जाती थी की दसवीं आठवीं नौवीं कक्षा तक आते-आते हुए काम आने वाली अधिकतर सामग्री को पढ़ने योग्य हो जाए।

पढ़ना और समझना : एक पड़ताल

एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित पुस्तक पढ़ने की दहलीज पर के छपे हुए लेख के अनुसार किसी भी विषय वस्तु को जो की लिखा हुआ है उसके अर्थ को गढ़ लेना तथा

धारणाओं की गणना करना और साथ ही साथ विचारों को आपस में जोड़ पाना और अपनी स्मृति में संजोग कर रख लेना पढ़ने की समझ को दर्शाता है पढ़ना सिर्फ वर्णमाला की पहचान शब्द या वाक्य को बोल भर पाना नहीं बल्कि उसके आगे बहुत और भी है।यानी कि लिखे हुए के अर्थ को समझ कर अपना नजरिया बनाना या फिर अपनी निजी समझ को विकसित करना तथा शब्द के हर एक अंश को पढ़ पाना ही एकमात्र पढ़ना नहीं होगा पढ़ने का अर्थ लिखे हुए के साथ संवाद करना तथा अपने अनुभवों एवं सैद्धांतिक संरचना को सांचे में लिखे हुए सांचे में डालना पढ़ना है कि कई प्रक्रिया नहीं है इसमें शामिल अक्षरों की आकृतियां और उनसे जुड़ी हुई ध्वनियों,वाक्य विन्यास, शब्दों और वाक्य के अर्थ और साथ ही अनुमान लगाने का कौशल पढ़ने के दौरान प्राप्त करना तथा लिखी हुई जानकारी या संकेत का विश्लेषण कर पाना है।

पढ़ना और उसको समझ पाना इसके कौशल को विकसित करने के लिए हमें बच्चों को डिकोडिंग से दूर रखने की आवश्यकता है। डिकोडिंग का अर्थ किसी भी शब्द को टुकड़ों में बांट कर पढ़ना या उसकी पहचाना फिर उसके बाद उसको बोलना और पढ़ पाना कहलाती है विद्यालय शिक्षा में भाषा के संदर्भ में यह प्रक्रिया जो रिकॉर्डिंग कहलाती है। वह वर्णमाला उच्चारण या शब्द बोलने जैसे विधियों द्वारा होता है जो की बच्चो में रतंत प्रणाली द्वारा होती है जो कि बोझ युक्त एवम काफी कठिन प्रक्रिया होती हैं।

जब हम किसी लेख को पढ़ने की कोशिश करते हैं तो उसमें सबसे महत्वपूर्ण बात यह है की जिस भाषा में लिखा हुआ है उस भाषा से हमारा परिचय,जो की इस बात पर निर्भर करती है की सर्वप्रथम हम भाषा से परिचय स्थापित करें परिचय के अभाव में पढ़ना संभव नहीं हो पाएगा उसके बाद भाषा की वाक्य विन्यास की शैली कैसी है वह किस संरचना में बंधी होती है तथा उनके शब्दों का स्तर और ध्वनियों का स्तर और तथा वाक्य का विन्यास किस प्रकार का है इसकी जानकारी हासिल करनी होगी। इसके बाद पूर्व ज्ञान तथा पूर्व अनुभव के द्वारा हम किसी भाषा और विषय को समझ पाते हैं। लिखने पढ़ने सुनने के समय अर्थ निर्मित करते रहना पूर्व अनुभव या पूर्व ज्ञान की सहायता से ही हो पता है पूर्वानुभव या

पूर्व ज्ञान का अर्थ है व्यक्ति के सभी अनुभव से अपनी धारणाएं स्किमा के रूप में अपने मस्तिष्क में संचित करना। समझने के लिए हम एक डाकखाने का दृष्टांत ले सकते हैं। जिस प्रकार अलग-अलग जगह की चिट्ठियों के लिए खाने बने होते हैं विशेष जगह की चिट्ठी के लिए उन खानों के दराजों में चली जाती हैं। उसी प्रकार अनुभव भी स्कीमा के रूप में बुद्धि में चली जाती हैं। यह खाका आपस में जुड़कर के एक अवधारणा का निर्माण करते हैं जो कि हमारी समझ को विकसित करता है।

पढ़ना कैसे सिखाया जाए

पढ़ने के दो मुख्य पहलू हैं प्रेरणात्मक तथा सूचनात्मक, प्रेरणात्मक पहलुओं का संबंध सिखाने वाले के निश्चिंत्यता और सीखने के प्रति उसकी लगन को बढ़ावा देने से है सूचनात्मक पहलू का संबंध उसके ज्ञान और कौशल को विस्तार देने से हैं पढ़ने के संबंध में जो समीक्षा हम प्रस्तुत कर रहे हैं उनका संबंध पढ़ने के दूसरे पहलू से है जो चुनिंदा आधुनिक शोधों पर ऐतिहासिक और अंतरराष्ट्रीय परिपेक्ष को प्रस्तुत करती है इसमें स्कूल के प्रारंभिक वर्षों में बच्चों के स्वाभाविक प्रगति पर बल देने के साथ-साथ बच्चों को पढ़ना सीखने में आने वाली समस्याओं का भी जिक्र किया गया है। 19वीं सदी से लगभग से लगभग 3000 हजार वर्ष पूर्व से वर्णमाला पद्धति से पढ़ना सीखने की मूलभूत पद्धति रही इस पद्धति में बच्चे सर्वप्रथम वर्णमाला के अलग-अलग अक्षरों की पहचान करते थे इसके बाद दो अक्षर वाले शब्दांश आदि सीखने थे इनमें से इन अक्षरों का एक-एक करके मौखिक रूप से नाम देना और फिर शब्दांश के रूप में उच्चारण करना सीखा जाता था इसी प्रक्रिया के सहारे बच्चे पहले छोटे शब्द फिर छोटे छोटे गद्य पढ़ने लग जाता था जो उसे समय की शैक्षिक उद्देश्यों को अपने महत्व के आधार पर चुनते थे 19वीं सदी के बाद में वर्णमाला पद्धति का महत्व कम होने लगा तथा जहां साक्षरता बहुत कम थी वहां सदी के अंतिम दशक में शिक्षण पद्धति पर एक नई पुस्तक प्रकाशित की गई।

फर्नी 1995 के अनुसार, "इस पुस्तक इस पुस्तक में वर्णमाला पद्धति के तीन विकल्प प्रस्तावित किए गए पहले स्वर्णिम पद्धति जिसमें बच्चों को प्रत्येक अक्षर के सबसे सामान्य ध्वनि सिखाई जाती थी उदाहरण अर्थ बन का उच्चारण यदि बच्चों को कोई मुद्रित शब्द मालूम नहीं होता था तो उन्हें सिखाया जाता था कि पहले वर्ण की ध्वनि को सिलसिले बार उच्चारण करें और उसके बाद अनुमान के आधार पर ध्वनियों को जोड़कर ऐसा शब्द बनाएं जो पहचान में आ सके दूसरा विकल्प था लुक और से देखो और कहो इस पद्धति में बच्चों को सिखाया जाता था कि पूरे एक शब्द को एक इकाई के रूप में देखें तथा पढ़ें और इसके अलग-अलग अक्षरों पर ध्यान ना दें फनी ने जिस तीसरे विकल्प को शिक्षकों द्वारा अपनाया जाने पर बोल दिया था वह तीन पद्धतियों के सर्वोत्तम बिंदुओं को जोड़कर बना तरीका था इस वैकल्पिक पद्धति से पहले वर्ण सिखाए जाते थे फिर देखो और बोलो पद्धति को अपनाया जाता था इसके बाद सैनिक पद्धति को अपनाते हुए जहां जरूरत होती थी वर्णों की ध्वनियों का ज्ञान कराया जाता था 19वीं सदी के बाद से पढ़ना सीखने के प्रति झुकाव कभी विश्लेषणआत्मक स्वर्णिम पद्धति पढ़ती तो कभी लचीले देखो और कहो पद्धति के बीच रहा।

19वीं सदी की शुरुआत से लेकर लगभग 3 दशकों तक अमेरिका की वाक्य पद्धति की तुलना में विश्व भर में कहानी कथन पद्धति को ज्यादा लोकप्रियता मिले, बच्चों के पढ़ना सीखने की शुरुआत प्रमाणिक साहित्य की कहानी सुनने से हुआ करती थी जब तक बच्चा कहानी के मौखिक रूप से परिचित नहीं हो जाता था उसे लिखित सामग्री पढ़ने की कोशिश नहीं करवाई जाती थी इसमें 1960 के दशकों में पढ़ना सीखने के लिए भाषा अनुभव प्रणाली का कई अंग्रेजी भाषी देशों में प्रभाव बना रहा इस प्रणाली में पठन को बच्चों द्वारा पहले से हासिल किए गए भाषा कौशलों के विस्तार के रूप में देखा गया साथ ही इस प्रणाली में अर्थपूर्ण संप्रेषण के रूप में पठन के उद्देश्य पर विशेष बल दिया गया आज की समग्र भाषा पद्धति अंशिता इस भाषा अनुभव का ही परिणाम है इस समग्र भाषा प्रणाली में अर्थपूर्ण संप्रेषण और साक्षरता संबंधी उन गतिविधियों की संपूर्णता और अखंडता पर अधिक बल दिया जाता है जिसमें बच्चे सक्रिय रूप से भागीदार रहते हैं पढ़ना सीखने का आरंभ करने के लिए बच्चों को प्रमाणित साहित्य पढ़ने की सलाह दी जानी चाहिए इस पद्धति में इस पद्धति

में साहित्य पर इतना बल दिया गया कि इस समग्र साहित्य पद्धति कहना ज्यादा बेहतर बन गया समग्र भाषा कार्यक्रम की तुलना बसल रीडर कार्यक्रम से की गई है बसल डिटेल कार्यक्रम एक प्रकार का विश्लेषणात्मक शिक्षण पद्धति है जो स्वर्णिम और संदर्भ सहित शब्दों पर आधारित है इस संबंध में रोचक निष्कर्ष सामने यह आया कि इस संदर्भ में किए गए सघन शोधनों में इनमें से किसी भी शिक्षण पद्धति के पक्ष में प्रमाण प्रस्तुत नहीं किए गए इसके परिणाम का तुलना में मुद्दे जैसे पाठ को द्वारा पाठ का स्वयं मूल्यांकन करना और साहित्य के प्रति कला के रूप में प्रतिक्रिया करना आदि शामिल थे।

पढ़ने की शुरुआत के संबंध में एक प्रमुख मुद्दा यह है कि क्या बच्चे अपने स्कूल के प्रारंभिक वर्षों में इतने सक्षम होते हैं कि वह पठन अनुभवों के लिए किसी मानदंड को व्यवहार में ला सके जांच के ऐसे थीम बना सके जिससे साहित्यिक कृति पर उनकी राय को पोस्ट करने में सहायक हो क्या वे थीम इस योग्य होते हैं कि अपने पठन अनुभवों को एक स्पष्ट उद्देश्य का रूप दे सकें और इसमें अलग-अलग परिपेक्ष को जोड़ सकें, पठन अनुभव पर बच्चों के विचार संबंधित शोध साहित्य की समीक्षा की उन्होंने यह समीक्षा विषय वस्तु लेखक और अन्य पाठकों के दृष्टिकोण से की शोध समीक्षा के परिणाम यह इंगित करते हैं कि 10 वर्ष की उम्र के बच्चों को साहित्यिक मूल्यांकन करने की सूर्य शुरुआत कराई जा सकती है इस उम्र में इस प्रकार का क्षण उनके लिए लाभदायक होगा जो साहित्य की कला के रूप में प्रति उनकी आलोचनात्मक प्रतिक्रिया के विकास में सहायक हो सके।

पढ़ने की प्रमुख पद्धतियां

शब्द पहचान विधि: शब्दों की पहचान के लिए समग्र भाषा प्रणाली के पक्षधर आमतौर पर एक सलाह देते हैं कि शिक्षक बच्चों को इस बात के लिए प्रेरित करें कि वह पढ़े गए पाठ के संदर्भ में अर्थ का अनुमान लगाए शोधों से काफी हद तक सामने आया है कि वस्तुत इसका उल्टा होता है और परिचित शब्दों की पहचान करने में पार्थो088 द्वारा संदर्भ को कम महत्व दिया जाता है।जॉनसन कन्हौली और थॉमसन ने एक शोध-में यह पाया कि 5 से 6 साल के बच्चे जिन्हें स्वर्णिम पद्धति और कहानी सुना कर दोनों प्रणालियों में पढ़ना

सिखाया गया था वह समग्र भाषा कार्यक्रम वाले बच्चों की तुलना में पूरी तरह अपरिचित चीजों नियमित शब्दों को ज्यादा अच्छी तरह से पढ़ पा रहे थे परंतु अनियमित वर्ण ध्वनि व्यवहार वाले सामान्य शब्दों को कम कुशलता से पढ़ पाए सैनिक पद्धति के माध्यम से पढ़ाया गए बच्चे समझ के साथ पढ़ने के लिहाज से फायदे में रहे जिसका कारण यह हो सकता है कि पढ़ने की धीमी गति की वजह से भी शब्द की बारीकियां पर अधिक ध्यान दे पा रहे होंगे। वर्णमाला पद्धति पढ़ने की शुरुआत के लिए जर्मनी में इकल सिमर ने सुनामी शताब्दी में एक शिक्षकों से आग्रह किया कि वह यह देखें कि इंसान ने सबसे पहले पढ़ना कैसे सीखा होगा और यह भी देखें कि अक्षर क्या देने से पहले बच्चों को यह सीखने की कैसे उच्चारण शब्दों को दिमाग में स्वर्णिम इकाइयों में विभाजित करके देखा जा सकता है पिछली सदी के मध्य में रूस के में उसे दिन उसकी ने हिस्टोरिक मेथड की अनुशंसा की यह तरीका इस बात पर आधारित था कि वर्ण क्रम व्यवस्था का तथाकथित आविष्कार कैसे हुआ 1992 की समीक्षा के अनुसार यह आविष्कार उसे अमूर्त ध्वनि यंस की खोज पर निर्भर करता है जो किसी भाषा के बोलचाल के शब्द का हिस्सा होते हैं अतः बोले जाने वाले शब्द के इस पहलू को सिखाना बच्चों के पढ़ना सीखने का पहला कदम होता है उदाहरण के लिए बच्चों को स्वर्णिम की पहचान एक विशेष आरंभिक ध्वनि पर आधारित मौखिक शब्दों को चुनकर करवाई जाए जैसे के से शुरू होने वाले कई मौखिक शब्दों का चयन करें और फिर प्रस्तुत मौखिक शब्दों के पहले स्वर्णिम और आखिरी स्वर्णिम की पहचान करें यह हिस्टोरिक मेथड व्यवहार में संतोषजनक रूप से लागू नहीं हो पाया हालांकि रूस ने 1960 और 70 के दशक में अल्कोहल इन द्वारा प्रतिपादित पठन अधिवेशन यानी पढ़ने के संबंध हिदायतें देने के कुछ ऐसे नए तरीके विकसित किए हैं। सामान्य प्रगति के लिए यदि पढ़ना सीखने की शुरुआत में इस सिद्धांत को ज्ञान आवश्यक माना जाता है कि शिक्षक को यह सुनिश्चित करना होगा की स्वर्णिम की पहचान बच्चों की शिक्षण की शुरुआत में करवाया जाए ऐसे ज्ञान के लिए क्या तब तक इंतजार किया जाए जब तक बच्चा अपने आप ऐसा करना नहीं सीख जाता फिर शिक्षण में स्पष्ट तौर पर इसका अभ्यास करवाया जाए ऑस्ट्रिलेया के बायर्न&फिल्डिंग बंसारले ने बताया की स्वर्णिम स्वरूपों का ज्ञान स्कूली शिक्षक शुरू होने से 4 साल की उम्र में शुरू करना चाहिए। यह 12 हफ्ते तक करवाया जा सकता है हालांकि दो-तीन वर्षों की

स्कूली शिक्षा के बाद प्रशिक्षण में पाया गया कि शब्दों को अक्षरों की ध्वनि से जोड़कर पढ़ने वाले इस समूह का प्रदर्शन दूसरे नियंत्रित समूह के मुकाबले बेहतर नहीं था ब्लैक मैन ने यह सिद्ध किया कि स्वर्णिम पहचान के साथ अक्षरों की ध्वनि का प्रशिक्षण 7 हफ्तों तक दिया गया तो 5 वर्ष के बच्चों को इससे लाभ होगा इस अध्ययन को अमेरिका के किंडरगार्डन कार्यक्रम में शामिल किया गया था जिन्हें व्यवस्थित पठान निर्देश नहीं दिए गए थे जिसके आश्चर्यजनक लाभ मिले समझकर पढ़ना पद्धति बच्चों के लिए सबसे ज्यादा आवश्यक कौशल यह है कि वह जो भी पढ़ें उसका समझ स्थापित कर सकें इसका भी पठन के साथ कोई सीधा संबंध नहीं देखा गया है परंतु यहां यह मुद्दा यह है कि सो स्पष्ट शिक्षक द्वारा मुद्रित पाठ को समझने के कौशल को बढ़ावा दिया जा सकता है अथवा नहीं कई देशों में या बहस का मुद्दा रहा है जैसे कि जापान में समझ के साथ पढ़ने की नई प्रणाली को अधिक से स्पष्ट व विश्लेषण आत्मक बोल दिया गया है जबकि कुछ वैश्विक रूप से व्यापक रही अमेरिका में समझ के साथ पढ़ना सीखने के उसे नमूने में अधिक रुचि ली जाती रही है जिसमें बच्चों को नई रणनीतियों से परिचित करवाया जाता है और यह बताया जा सकता है कि उन वीडियो का कब और कैसे इस्तेमाल किया जाए।

पढ़ने के प्रचलित तरीके

यह एक आम मान्यता है की पढ़ना अक्षरों शब्दों वर्तनी संरचना और भाषा की बड़ी इकाइयों का कुछ विस्तृत अनुक्रमिक ज्ञान और पहचान है पढ़ने की स्वनिक (phonic) आधारित आधारित पद्धति में अक्सर विशेष की पहचान करना प्रमुख होता है शब्द केंद्रित पद्धतियों में शब्द के पहचान पर ध्यान दिया जाता है तथा परिचित शब्द ऐसे देखे समझे शब्द हैं जिन्हें किसी भी संदर्भ में पहचाना जा सकता है इसका मतलब यह नहीं कि जिन लोगों के पठान के क्षेत्र में घंटा से कार्य किया है वह इस बात से अवगत नहीं है कि पढ़ने वास्तविक व अनुक्रमिक पहचान से कहीं अधिक है लेकिन पढ़ने को लेकर यह सामान्य धारणा उपयुक्त ना होते हुए भी पढ़ने की समझ को लेकर हो रहे विचार विमर्श को लगातार प्रभावित करती रही है। स्पआर्स के अनुसार, "शाब्दिक रूप से प्रस्तुत करते हुए अपने सरलतम रूप में पढ़ने को

शब्द प्रत्यक्षण की श्रृंखला के रूप में समझाया जा सकता है"। लिपिनकाट के अनुसार, "बच्चा बच्चे अक्षर प्र अक्षर तरीके को अपनाकर आरंभ से ही शब्द को इस तरह देखना सीख जाता है जिस प्रकार एक कुशल पाठक एक शब्द को सभी अक्षरों के साथ संपूर्णता में पड़ता है।"

कैनाथ गुडमैन कहते हैं कि, "पढ़ना एक चयनात्मक प्रक्रिया है जिसमें पाठक की अपेक्षाओं के आधार पर प्रत्यक्ष सामग्री से चुने हुए थोड़े बहुत उपलब्ध भाषा संकेत शामिल होते हैं।" पढ़ने की प्रक्रिया में जैसे-जैसे यह आंशिक जानकारी बढ़ती जाती है ।पढ़ने में ऐसे अस्थाई निर्णय भी लिए जाते हैं। जिन्हें प्रमाणित भी करते हैं नकारते भी हैं और परिवर्तित भी करते हैं। बड़े सरल ढंग से कहें तो पठान एक मनोभाषिक अनुमान लगाने का खेल है। जिसके विचार और भाषा की अंतर क्रिया शामिल होती है। कुशल पठन सहित समझ और सही अवयवों की पहचान के परिणाम स्वरुप नहीं होता बल्कि यह एक कुशल है जिसके अंतर्गत पाठक अपने उपयुक्त संकेत को चुनता है। और उसके आधार पर पहले ही बार में सटीक अनुमान लगाता है निश्चय ही पढ़ते समय जो देखा नहीं किया उसका पूर्वानुमान लगाने की योग्यता पढ़ने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण है। ठीक उसी तरह जैसे जो सुना नहीं गया उसका पूर्वानुमान लगानेकी योग्यता सुनने में महत्वपूर्ण है।

चोमस्की का कहना है का कहना है की भाषा में इनकोडिंग एक सुनिश्चित स्तर तक पहुंच जाती है इसके परिणाम स्वरूप जो संकेत मिलता है वह अपने आप में पूरा होता है लेकिन डिकोडिंग के निर्देशन में की प्रक्रिया का लक्ष्य संदेश के लगभग समेत पहुंचना होता है इसके फल स्वरुप मिलने वाला कोई भी कोडेड या मिलता जुलता संकेत एक प्रकार का प्रतिपादन होता है अर्थात पढ़ते समय पाठक एक समय पर दो कार्य करने होते हैं, वह पाठ के छपे हुए संस्करण के समतुल्य मौखिक चीजों को पड़ता है जिसे पढ़ने के संदर्भ में संकेत कहते हैं और साथ ही वह कुछ भी पढ़ रहा है उसके अर्थ का पुनर्निर्माण भी करें मोटे तौर पर चांस की के निर्वाचन मॉडल में मिलन की प्रक्रिया को रिकॉर्डिंग संक्रिया कहा जा सकता है। पाठक कोडेड ग्राफ निवेश को एक स्वनिमिक या मौखिक आउटपुट के रूप में रिकॉर्ड करता है। इस

प्रक्रिया में प्राय अर्थ की सीमा तक शामिल नहीं होता। यह रिकॉर्डिंग किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा भी सीखी जा सकती है जो उसे भाषा विशेष को बिल्कुल भी नहीं जानता हो उदाहरण के तौर पर एक बार किशोर या समझने की क्षमता के बगैर कि वह क्या उच्चरित कर रहा है हिब्रू लिपि का मौखिक उच्चारण तो कर सकता है लेकिन हेबर लिपि को सीखने के लिए उत्साहित नहीं हो सकता लेकिन जब पाठक लेखक की रचना के अर्थ में पुनर्निर्माण के लिए अर्थ संकट विश्लेषण में जुड़ जाता है तब वह रिकॉर्ड कर रहा होता है। गुडमैन से अपने मॉडल में बताए गए कुछ विशेष बातें के अनुसार, 1. पाठक प्रिंट को बाय से दाएं बाएं से दाएं सरसरी नजर दौड़ता हुआ पंक्ति दर पंक्ति नीचे की ओर आता है वह अपनी आंखें एक स्थान पर केंद्रित करता है कुछ प्रिंट तो आंखों के सिद्ध में केंद्रित होते हैं तथा कुछ एक दायरे में होंगे जो शायद उसकी अवधारणा आत्मक धैर्य से थोड़ा साखरा हो सकता है। अपचयन की प्रक्रिया आरंभ होती है। वह अपने पहले के चयन भाषा संबंधी अपने ज्ञान अपने संज्ञानात्मक शैलियों और अपनी सीखने की युक्त की बद्ताओं से मार्गदर्शन लेटा हुआ ग्राफिक संकेत का चयन करता है। वह इन संकेतों और अनुमानित संकेत का प्रयोग करते हुए एक प्रत्यक्ष बोधात्मक चित्र बनाता है।

कुछ हद तक यह चित्र जो कुछ उसने देखा या देखने की आशा कर रहा है अब वह संबंधित वाक्य विन्यास अर्थ संकेत स्वर्णिम विज्ञान संबंधी संकेतों के लिए अपनी विश स्मृति को टटोलत है। यह उसे कुछ और ग्राफिक संकेत का चयन करने और बोधात्मक चित्रों को पुनर्निमित करने की ओर ले जाता है। इस बिंदु पर वहग्राफिक संकेतों के सामंजस्थ रखने वाले अनुमान या अस्थाई चयन को कर पता है अर्थगत विश्लेषण जहां तक संभव हो आशिक रिकॉर्डिंग में मदद करता है, जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता है या अर्थ उसकी अल्पकालिक स्मृति से जुड़ता चला जाता है यदि कोई अनुमान लगाना संभव नहीं है तो फिर वह अपनी स्मृति में इकट्ठे हुए शब्दों को परख कर फिर दोबारा प्रयास करेगा यदि तब भी कोई अनुमान लगाना संभव नहीं है तो अधिक ग्राफिक संकेत की तलाश में वह पाठ सामग्री पर एक बार फिर नजर डालता है यदि वह रिकॉर्ड करने लायक चयन कर सकता है तो उसे अपने पूर्व चरणों और डिकोडिंग द्वारा विकसित किए जाने संदर्भ में अर्थ का तो व्याकरण एक स्वीकृति के लिए

जांचता है यदि अस्थाई विकल्प अर्थ विज्ञान या वाक्य विज्ञान के नियमों के अनुसार स्वीकार नहीं होते हैं तो वह पीछे लौटकर पंक्ति पर बैन से दाएं फिर से सर्जरी नजर डालता है और पूरे पृष्ठ पर अर्थगत या वाक्य विन्यास की संगति के बिंदु को तलाशता है जब ऐसा कोई बिंदु मिल जाता है तो वह उसे बिंदु से पढ़ना आरंभ करता है यदि संगति पहचानी नहीं जा सकी तो वह किसी ऐसे संकेत को तलाश में आगे पड़ता है जो उसे संगति के समाधान को संभव बना सके इस प्रकार यह प्रक्रिया चलती रहती है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में हम अवलोकन प्रविधि के दौरान कक्षा में छात्रों का शिक्षक तथा क्रियाकलापों का अवलोकन करने का प्रयास करेंगे जिसके द्वारा हम यह देख सकेंगे की कक्षा में बच्चों को किस प्रकार पढ़ाया जा रहा है तथा बच्चे किस प्रकार अपने पढ़ने के समझ को विकसित कर पा रहे हैं। तथा साक्षात्कार की प्रविधि में हम विद्यालय के कुछ भाषा के शिक्षकों का साक्षात्कार करेंगे जो की असंचरित और संचारित साक्षात्कार के द्वारा होगा इसमें हम शिक्षकों से छात्रों को उनके द्वारा पढ़ने की तौर तरीकों का अध्ययन करने का प्रयास कर रहे हैं।

विषयगत विश्लेषण

शोधकर्ता ने उपयुक्त अवलोकन का गहन अध्ययन किया है। अवलोकन के दौरान बनाए गए गतिविधि एवं संकल्पनात्मक कार्य से प्राप्त अंतर्दृष्टि के आधार पर शोधकर्ता ने बुनियादी पढ़ने से संबंधित अपने अवलोकनों में से इन थीम को छांटा है। यह थीम मूल रूप से बुनियादी पठन ज्ञान पर आधारित है और यह आंकड़ों के लिए विश्लेषण का सर्वोत्तम प्रतिनिधित्व करती हैं। इस हिस्से में पढ़ने के समझ के संबंध को कक्षा प्रक्रिया के दौरान समझने का प्रयास किया गया है। विद्यालय में कक्षा एक से तीन तक के बच्चों को पढ़ने को बताने का प्रयास किया गया है। कक्षा अवलोकन के समय हमने बच्चों को पढ़ने की समझ

को कैसे विकसित करें एवम कैसे सार्थक पाठक बने इसे परखने का प्रयास किया है। गतिविधि को निम्नलिखित थीम में बांट लिया गया:-

डिकोडिंग:

शिक्षाविद् शारदा कुमारी कहती हैं की शिक्षण व्यवस्था में बच्चों को सही तरीके से पढ़ना सीखने या पढ़ने की क्षमता को विकसित करने के लिए यह बहुत जरूरी है कि बच्चों को डिकोडिंग से दूर रखा जाए डेकोडींग का आशय यह होता है कि बच्चों को टुकड़ों में बताकर पहचानना फिर उसे बोल पाना या पढ़ पाना भाषा की कक्षा में डिकोडिंग पर आधारित वीडियो जैसे वर्णमाला उच्चारण या शब्द बोलना कुछ प्रमुख विधियां आजकल बहुत लोकप्रिय हैं। प्रस्तुत शोध को करते वक्त शोधार्थी ने पाया कि प्रथम विद्यालय में शिक्षिका बच्चों को वर्णमाला को रटवाने के लिए प्रतिदिन कक्षा में दोहराने के लिए प्रोत्साहित कर रही हैं वह कई दिनों तक रट्टा लगवा करके बच्चों को वर्णमाला याद करवाने का प्रयास कर रहे हैं वर्णमाला को रटवा लेने के बाद वह उसके उच्चारण पर और शब्द बोलने पर ध्यान दे रही हैं शिक्षिका का सारा ध्यान बच्चा कितनी सही ढंग से पढ़ रहा है इस पर है।

व्यवहारगत अधिगम

शोधार्थी ने शोध करते समय यह पाया की एक विद्यालय में शिक्षिका महोदय बच्चों के भाषण कौशल को बढ़ाने के लिए अभ्यास पर ज्यादा बल दे रही हैं वह वाक्य को टुकड़ों में बताकर पढ़ने की प्रयास कर रही हैं। शिक्षिका ने साक्षात्कार के समय यह बताया कि बच्चों को प्रतिदिन अभ्यास करवाने से बच्चों की आदत का निर्माण हो जाता है जिससे वह किताबों को आसानी से पढ़ पाते हैं शिक्षिका ने यह भी बताया कि वह प्रतिदिन बच्चों के पूर्व ज्ञान को दोहराने का प्रयास भी करती हैं वह आज जो कक्षा लेते हैं दूसरे दिन आज पढ़ाई गई पठन

सामग्रियों को बच्चों को याद करने के लिए उसको दोहराती हैं। शिक्षाविद् शोभा सिन्हा कहती हैं की, "पढ़ने की समझ विकसित करने में एक बहुत बड़ी समस्या हमारा व्यवहारवादी दृष्टिकोण भी है व्यवहारवादी दृष्टिकोण दक्षता और अभ्यास पर ज्यादा जोर देता है इसमें भाषा को अभ्यास के उद्देश्य से टुकड़ों में बांट कर अर्थ निर्माण और बिना मतलब की इकाइयों में बदल दिया जाता है और यह किसी चीज को उसके समूचेपन से जानने का सही तरीका नहीं है इससे मात्र अर्थ हीनता ही आती है और कुछ नहीं।"

बॉटम अप पद्धति

शोधार्थी ने शोध करते समय पाया की विद्यालय में हिंदी विषय का अध्ययन कराने के लिए शिक्षिका ने जिस विधि प्रयोग किया है उसमें वह सबसे पहले बच्चों को वर्णमाला सिखाने का प्रयास करती हैं, उसके बाद वह बच्चों को वर्णो से शब्द बनाना, फिर शब्दों से वाक्य बनाना और वाक्य से लेख बनाना सिखाती है। शिक्षिका बताती हैं कि यह एक सरल विधि है जिससे बच्चों में पढ़ने की समझ विकसित होती है। बच्चे आसानी से चीजों को समझ जाते हैं तथा जब बच्चे वर्णमाला से लेकर आगे की तरफ बढ़ते हैं तो वह अच्छे से पुस्तकों को पढ़ सकते हैं। शिक्षाविद शोभा सिंह जी ने इस प्रकार की पद्धति को 'बॉटम-अप' कहा है। वे कहती हैं कि "यह पद्धति नीचे से ऊपर जाने वाली पद्धति है और इसको प्रस्तुतीकरण करने में शुरुआत में काफी परेशानी पैदा होती है क्योंकि वह कुल मिलाकर एक अमूर्त और अर्थ विहीन होते हैं। बच्चे को पढ़ाना एक सरलतम तरीका नहीं हो सकता है इसके अलावा वह किसी अन्य पाठ-सामग्री को बॉटम-अप तरीके से समझाने या उसको प्रस्तुत करने का विरोध करती हैं। उनका मानना हैं की अक्षरों पर जरूरत से ज्यादा जोर देना पढ़ने के प्रति बच्चे का ध्यान विचलित करता है।"

अर्थ हीन पाठ्यसमग्री

शोधार्थी ने शोध करते वक्त पाया कि कक्षा 2 में शिक्षिका महोदय एक बच्ची से एक कविता का पाठ करवाती हैं तथा सभी बच्चे उसे दोहराते हैं वह कविता इस प्रकार थी_

अ से अनार ,आ से आम;
अभी करो सब अपना काम
इ से इमली, ई से ईख;
अच्छी-अच्छी बातें सीख
उ से उल्लू, उ से ऊन;
दादी मेरा स्वेटर बुन
ऐ से एडी, ऐ से ऐनक;
हम सब हैं देश के सेवक
ओ से ओला,औ से औरत;
मन लगाकर करो तुम मेहनत

शिक्षाविद् शोभा सिंह जी कहती हैं कि हमारे शिक्षण व्यवस्था में अधिकांश पाठ सामग्रियां अर्थ विहीन है जिनका वास्तव में सक्रिय तौर पर बच्चों को अर्थ पर गौर न करना सिखाया जाता है अगर वह अर्थ समझने के लिए पढ़ते हैं तो यह अनुभव बेतुका सिद्ध होता है क्योंकि मूल पाठ से सुसंगत या समझने लायक कुछ भी बच्चों के वातावरण से नहीं होता है बच्चों को इन पाठों में आनंद प्राप्त करने की उम्मीद करना मुश्किल है, तथा सब कुछ को दरकिनार कर सकार अथवा ध्वनियों के प्रति अंध मोहग्रस्तता के साथ पाठ को विषय पर केंद्रित नहीं रहने देती और कभी-कभी तो उन्हें साफ तौर पर अटपटा असंगत और बेमानी बना देती है।

प्रेरणात्मक शिक्षण

शोधार्थी ने शोध करते हुए यह पाया कि एक विद्यालय में शिक्षिका महोदया बच्चों को केवल उनकी अर्थात पाठ्यक्रम की पुस्तक को पढ़ने तथा पुस्तक में दिए गए अभ्यास प्रश्न

को हल करने को ही अपना दायित्व समझती हैं। साक्षात्कार में उन्होंने बताया कि हमारा काम पाठ्यक्रम को समय से खत्म करना है। जिसके लिए हमे साल के 9 से 10 महीने का ही समय मिलता है अतः हमको इस समय में अपना पाठ्यक्रम खत्म करना होता है नहीं तो अभिभावक इस बात की नाराजगी जताते हैं कि उनके बच्चों का पाठ्यक्रम अभी पूरा नहीं हुआ। शिक्षाविद जी ब्रायन थॉमसन कहते हैं की" शिक्षण के दो मुख्य पहलु होतें हैं। एक प्रेरणात्मक तथा दूसरा सूचनात्मक। प्रेरणात्मक पहलुओं का संबंध सिखाने वाले की निश्चिंताता और सीखाने के प्रति उसकी लगन को बढ़ावा देने से है। सूचनात्मक पहलुओं का संबंध उसके ज्ञान और कौशल को विस्तार देने से है। परंतु इन विद्यालयों में शोधार्थी ने पाया की शिक्षिका महोदया केवल बच्चों को सूचनात्मक पहलू को वरीयता दे रही हैं उनके प्रेरणात्मक पहलू को वरीयता नहीं दे रही हैं क्योंकि वह केवल बच्चों को अभ्यास प्रश्न के लिए तैयार कर रहे हैं तथा उनका सारा ध्यान बच्चों के पाठ्यक्रम को पूरे करने पर है। छात्रों को एक सार्थक व स्थाई पाठक बनाने की तरफ नहीं है।

पुस्तकालय की आदत

शोधार्थी ने शोध में पाया कि विद्यालयों में प्रारंभिक कक्षा में पढ़ने वाले छात्रों को पुस्तकालय की सुविधा उपलब्ध नहीं है साक्षात्कार के दौरान एक विद्यालय ने यह कहा कि हम कक्षा एक तथा दो के बच्चों को पुस्तकालय में ले जाते हैं उनको बैठाते हैं किंतु किताबें उनको हम डिजिटल माध्यम में टीवी पर दिखाने का काम करते हैं इस प्रकार बच्चों में किताबों की समझ उत्पन्न होती है, शिक्षिका बताती हैं कि वह बच्चों को पुस्तक नहीं देते क्योंकि उसे फटने का या खो जाने का डर होता है। इसी प्रकार एक अन्य विद्यालय में भी प्रधानाचार्य महोदय ने बताया कि हम छोटे बच्चों को जो अभी कक्षा 10 से नीचे हैं उनको पुस्तकों तक की पहुंच मुहैया नहीं करा सकते हैं क्योंकि छोटे बच्चे किताबों को फाड़ देते हैं तथा चोरी होने का डर है इसलिए हम केवल बड़े बच्चों को ही पुस्तक देते हैं छोटे बच्चों को पुस्तक नहीं देते हैं। प्रख्यात शिक्षाविद् लता पांडे कहते हैं की,"बच्चों में पढ़ने के प्रति रुचि जगाने में विद्यालय के पुस्तकालय बड़ी भूमिका निभा सकते हैं हमारे प्राथमिक विद्यालयों में

यदि पुस्तकालय की संख्या बढ़ाई जाए तथा उनमें पुस्तकालय के अंदर बच्चों के पाठ्यक्रम से इतर आनंददायक किताबें रखे जाएं तो बच्चे खूब मन लगाकर के पढ़ेंगे बच्चे नई चीज को पढ़ना उनके अंदर उमंग को भर देता है छपि या लिखी गई सामग्री को पढ़ने की कोशिश करना बच्चों के लिए एक खेल के तरह लगता है, तथा वो बतातीं हैं की पढ़ने के लिए एक समृद्ध वातावरण का प्रभाव इतना सशक्त होता है कि वह विशेष आवश्यकता वाले बच्चों पर भी इसका चमत्कारिक प्रभाव दिखाता है इसकी शारीरिक तथा मानसिक बड़ा खेल कूद व अन्य प्रकार की क्रियो से वंचित रखती हैं ऐसे में पढ़ने का समृद्ध वातावरण जिसमें मानसिक एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ होने का एहसास बनाए रखना है।"

समृद्ध वातावरण

शोधार्थी ने शोध में पाया कि विद्यालयों की दीवारों पर अधिकतर महापुरुषों के चित्र तथा उनके विचार लिखे हुए हैं, तथा अधिकतर विद्यालयों में दीवारों पर कार्टून के आकर्षक चित्रों से सजाया गया है तथा कुछ विद्यालयों में किसी धर्म विशेष के पूजनीय लोगों के चित्रों से सजाया गया है या किसी संस्था तथा उनके प्रणेताओं के चित्रों को अधिकता दी गई है। शिक्षाविद् लता पांडे कहती हैं कि "बच्चों के पढ़ने के प्रति रुचि विद्यालय के वातावरण एक बड़ी भूमिका निभा सकते हैं बच्चों को विद्यालय में रोचक सामग्री मुहैया करवा करके उनको पढ़ने के लिए तत्पर किया जा सकता है बच्चों के चारों ओर बिखरा भाषाई संसार ही उनके भाषा सीखने की बड़ी भूमिका अदा कर सकता है क्योंकि पाठ पुस्तक के पन्नों में छपी सामग्री को पढ़ना ही पढ़ना नहीं है अपने चारों ओर बिखरी लिखित तथा छुपी हुई सामग्रियों को पढ़ पाना तथा उसमें से अर्थ निकालना ही सही मायने में पढ़ना है"

पुस्तकीय ज्ञान पर बल

शोधार्थी ने शोध में पाया की शिक्षिका विद्यालयों में जो पाठ्यक्रम को निर्धारित किया गया है उसे पाठ्यक्रम को पूरा कर लेने तथा वर्ष के अंत में होने वाली परीक्षा में अच्छे अंक

को प्राप्त कर लेने को ही अपना दायित्व मान लिया है। शिक्षाविद लता पांडे बताती हैं कि "पढ़ना ऐसा कौशल है जो एक बार सही ढंग से बच्चों के अंदर विकसित हो गया तो बच्चा स्थाई पाठक बनकर रहता है फिर पढ़ना ही उसके लिए दुनिया में सबसे अधिक आनंद दायक काम होता है उसे नई-नई किताबें ढूंढने उन्हें पढ़ने में रस प्राप्त होता है एक किताब पढ़ कर खत्म करने के बाद दूसरी किताब पढ़ने की ललक जागती है किताब पढ़ने के बाद उसके पात्रों के उसकी विषय वस्तु के बारे में सोचता है उसके मन में करेगा तो किसी और से पढ़ी गई किताब के बारे में बात करेगा एक बार पढ़ने की भूख जग गई तो वह जीवन पर्यंत बनी रहती है।"

निष्कर्ष

किसी भी शोध का सबसे बड़ा उद्देश्य है की वह शोध समाज में सकारात्मक परिवर्तन के लिए एक कदम उठाने का प्रयास हो। इस लघु शोध में प्रारंभिक विद्यालय में अध्यनरत विद्यार्थियों की बुनियादी साक्षरता एवं उनकी पढ़ने की समझ का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है जिसमे पाया गया की शिक्षार्थियों को पढ़ने के प्रति अपनी रुचि को बढ़ाना अति आवश्यक है उनको समझना होगा कि किसी भी पाठ को सिर्फ पढ़ लेना तथा परीक्षा में उत्तीर्ण कर लेना ही उसके मुख्य उद्देश्य नहीं है बल्कि किसी भी पाठ को इस प्रकार से पढ़ा जाए कि वह उनके आत्मसात हो जाए तथा वह पढ़ने के लिए सिर्फ अपने पाठ्य पुस्तक पर निर्भर न रहे बल्कि अपने आसपास की सभी चीजों से अपने आप को पढ़ने के लिए प्रेरित करते रहें। पढ़ना सिर्फ वर्णमाला की पहचान शब्द तथा वाक्य को बोल भर पाना नहीं है बल्कि इसके आगे लिखे हुए को अर्थ समझकर अपना नजरिया बनाना या फिर अपनी निजी समाझ विकसित करना है। शब्द के छोटे-छोटे टुकड़ों को बोलना पढ़ना नहीं हो सकता है।

पढ़ने का मुख्य अर्थ लिखे हुए के साथ संवाद करना और अपने अनुभव तथा सैद्धांतिक संरचना के ढांचे में लिखे हुए को ढालना। शिक्षकों के दृष्टिकोण से यह पाया गया की आजकल के विद्यालय में जो पद्धति चलाई जा रही है इसे बदलने की आवश्यकता है। तथा इसी के साथ-साथ इमार्जेंट लर्निंग की पद्धति को भी अपनाना होगा शिक्षकों को यह समझना होगा कि पढ़ना एक अचानक से प्राप्त क्रिया नहीं है। इसमें आकृतियों की और उससे जुड़ी ध्वनियों वाक्य विन्यासों शब्दों और वाक्य के अर्थ और उनके साथ ही अनुमान लगाने का एक कौशल भी शामिल है। पढ़ने में सबसे महत्वपूर्ण है लिखी हुई जानकारी को ग्रहण करना। शिक्षकों को चाहिए कि वह एक ऐसा वातावरण बनाएं जिससे कि छात्रों को या छात्राओं को पढ़ने का एक अच्छा माहौल मिले एक ऐसा वातावरण बनाया जाए जिससे की विद्यार्थियों के आसपास पढ़ने की वातावरण विकसित हो साथ ही शिक्षकों को पाठ सामग्री की अर्थहीनता को दूर करना चाहिए एवं छात्रों को डिकोडिंग यानी की शब्द को टुकड़ों में बांट बांट कर पहचानने और उसे बोलने एवं पढ़ने जैसी चीजों से दूर होना चाहिए। तथा इसी के साथ ही शिक्षकों को प्रारंभिक विद्यालयों में भी पुस्तकालय को बच्चों के लिए मुहैया कराना अति आवश्यक है बच्चे अपने पाठ्यक्रम के इतर कहानी,कविताएं,नौटंकी,नाटक को जितना ज्यादा देखे सुनेंगे पढ़ेंगे उससे उनके अंदरपढ़ने की समझ विकसित होगी। अभिभावकों को बच्चों पर किसी प्रकार का बोझ नहीं बनाना चाहिए। उनको यह बात की चिंता नहीं करनी चाहिए कि उनका बच्चा कक्षा 2 में है तथा अभी पुस्तक नहीं पढ़ पा रहा है।उनको इत्मीनान के साथ इस बात का विश्वास रखना चाहिए कि पढ़ना धीरे-धीरे होने वाली प्रक्रिया है। तथा इसमें समय लगता है पढ़ने में सबसे ज्यादा आवश्यक है पढ़ना और उसके साथ उसका अर्थ ग्रहण कर पाना इसी के साथ अभिभावकों आकांक्षाओं से मुक्त होना होगा उनको अपने बच्चों में विश्वास जागृत करना होगा कि उनके बच्चे धीरे-धीरे ही सही लेकिन अच्छा पढ़ सकेंगे।अभिभावकों को सिर्फ विद्यालय के भरोसे ही बच्चों को नहीं छोड़ देना होगा बल्कि उनको अपने घर पर भी एक ऐसा माहौल बनाना होगा जिससे कि बच्चों में पढ़ने की समझ विकसित हो और उससे भी ज्यादा बच्चों को पढ़ने के लिए एक उत्सुकता, प्रेरणा

भरा ऐसा माहौल देना चाहिए जिससे कि बच्चों में खुद नवीन पुस्तक तथा पाठ सामग्रियां पढ़ने में आनंद मिले अभीभावकों को इन सभी चीजों की उपलब्धता करनी होगी।

*****

संदर्भ

- Albert, M. (1975). Cerebral dominance and reading habits. *Nature, 256*(5510), 403.
- Beck, I. (1985). Five problems with children's comprehension in the primary grades. In J. Osborn, P. T. Wilson, & R. C. Anderson (Eds.), *Reading education: Foundations for a literate America* (pp. 239–253). Lexington Books.
- Biemiller, A. (1970). The development of the use of graphic and contextual information as children learn to read. *Reading Research Quarterly, 6*(1), 75–96.
- Betts, E. A. (1963). *Ride in, Time to play: Second Pre-primer, Betts Basic Readers* (3rd ed.). American Book.
- Betts, E. A., & Welch, C. M. (1963). *Stop and Go: All in a Day, Third Pre-primer, Betts Basic Readers*. American Book.
- Cambonan, B. (1984). Language learning and literacy. In A. Butler & J. Turbill (Eds.), *Two in a reading-buying classroom* (pp. 5–9). Heinemann.
- Cattell, J. M. (1886). Time taken up by cerebral operations. *Mind, 11*, 220–242.
- Chomsky, N. (1965). *Lecture at Project Literacy, Cornell University, June 18*.
- Goodman, K. (1986). What is whole in whole language? Heinemann.
- Goodman, Y. M. (1967). *Unpublished dissertation: A psycholinguistic description of observed oral reading phenomena in selected beginning readers*. Wayne State University.
- Hayes, W. D. (1963). *My brother is a genius: Adventures Now and Then* Book 6. Betts Basic Readers (3rd ed.). Betts & Welch.
- Hood, J., & Kendall, J. R. (1975). Qualitative analysis of oral reading errors of reflective and impulsive second graders: Follow-up study.
- Huey, E. (1908). *The science and pedagogy of reading* (Reprint ed., 1968). MIT Press.
- Krishna Kumar. (1992). *Child language and teacher*. National Book Trust India.
- Miller, G. A. (1963). Some preliminaries to psycholinguistics. *American Psychologist, 18*, 21–29.
- McCracken, G., & Walcott, C. C. (1963). *Basic reading, teacher's ed. for the pre-primer and primer*. B. Lippincott.
- Miller, G. A. (1963). Decision units in the perception of speech. *Institute of Radio Engineering Transactions on Information Theory, 8*, 81–83.

- Owings, R. A., Peterson, O. A., Weldshord, J. D., Morris, C. D., & Stein, B. S. (1980). Spontaneous monitoring and regulation of learning: A comparison of successful and less successful ninth graders. *Journal of Educational Psychology, 72*, 250–256.
- Paris, S. G., & Lindauer, B. K. (1976). The role of inference in children's comprehension and memory for sentences. *Cognitive Psychology, 8*, 217–227.
- Pearson, P. D., Hansen, J., & Goroon, C. (1979). The effect of background knowledge on young children's comprehension of explicit and implicit information. *Journal of Reading Behavior, 11*, 201–209.
- Prom, P. D., & Son, J. (1980). Toward a theory of reading comprehension instruction. *Topics in Language and Literacy*.
- Serres, M., Jose, C., & R. C. (1979). A cross-cultural perspective on reading comprehension. *Reading Research Quarterly, 15*, 10–20.
- Sinha, S. (2001). Acquiring literacy in schools. *Seminar, 493*, 38–421.
- Spache, G. (1964). *Reading in the elementary school*. Allyn & Bacon.
- Taylor, E. A. (n.d.). The spans: Perception, apprehension and recognition. *American Journal of Ophthalmology, 44*, 501–507.
- Teal, D. H., & Salvi, E. (1996). Introduction: Emergent literacy as a perspective for examining how young children learn to read. *Reading Research Quarterly, 6*, 50–63.
- Weber, R. M. (1970). A linguistic analysis of first-grade reading errors. *Reading Research Quarterly, 5*, 427–451.
- Wilson, P. T., & Anderson, R. C. (1985). Reading comprehension and school learning. In J. Osborn & P. T. Wilson (Eds.), *Reading education: Foundations for a literate America* (pp. 257–273). Lexington Books.